FOR MORE FREE PDFS https://www.studymasterofficial.com

प्राचीन भारत

भारतीय इतिहास के स्रोत

- भारतीय इतिहास के विषय में जानकारी के चार प्रमुख स्रोत हैं - धर्मग्रन्थ , ऐतिहासिक धर्मग्रन्थ , विदेशियों का विवरण एवं पुरातत्त्व - संबंधी साक्ष्य ।
- चाणक्य द्वारा रचित ' अर्थशास्त्र ' नामक पुस्तक से मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी मिलती है ।
- कल्हण द्वारा रचित ' राजतरंगिणी ' को ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित भारत की प्रथम पुस्तक कहा जाता है । इससे कश्मीर के इतिहास की जानकारी मिलती है ।
- पाणिनी द्वारा रचित संस्कृत भाषा व्याकरण की प्रथम पुस्तक ' अष्टाध्यायी से । भी प्राचीन भारतीय इतिहास से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होती हैं ।
- विदेशी लेखकों में मेगस्थनीज , टॉलमी , फाह्यान , हेनसाँग , इत्सिंग , अलबरूनी , तारानाथ , माकपोलो इत्यादि की पुस्तकें प्राचीन भारतीय इतिहास के विभिन्न कालों के विवरण की महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं ।
- मेगस्थनीज सेल्युकस निकेटर का राजदूत था , जो चन्द्रगुप्त के राजदरबार में । आया था , इसके द्वारा रचित पुस्तक ' इण्डिका से मौर्यकालीन समाज एवं संस्कृति के संबंध में महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती हैं ।
- टॉलमी ने भारत का भूगोल ' नामक पुस्तक लिखी ।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) के दरबार में आने वाले चीनी यात्री फाह्यान द्वारा लिखे गए विवरणों से गुप्तकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति की जानकारी मिलती है ।
- हर्षवर्धन के शासनकाल में आने वाले चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा लिखे भ्रमण वृत्तांत ' सि - यू - की ' से छठी सदी के भारतीय समाज , धर्म तथा राजनीति के बारे में पता चलता है ।
- इत्सिंग नाम चीनी यात्री सातवीं शताब्दी के अन्त में भारत आया था , इसने अपने विवरण में नालंदा विश्वविद्यालय , विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा अपने समय के भारत का वर्णन किया है ।
- महमूद गजनवी के साथ दसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारत आने वाले लेखक अलबरूनी ने अपना विवरण तहकीक - ए - हिन्द या किताबुल हिन्द (भारत की खोज) नामक पुस्तक में लिखा है , इसमें राजपूत - कालीन समाज , धर्म , रीति - रिवाज , राजनीति आदि पर सुन्दर प्रकाश डाला गया है ।
- तारानाथ एक तिब्बती लेखक था , जिसने कंग्युर तथा तंग्युर नामक दो पुस्तकों में भारतीय इतिहास का वर्णन किया है ।
- पुरातत्त्व संबंधी साक्ष्यों में अभिलेख , सिक्के , अवशेष , इत्यादि से भारतीय इतिहास के विविध पहलुओं का पता चलता है ।
- मध्य भारत में भागवत धर्म विकसित होने का प्रमाण यवन राजदूत | ' होलियोडोरस ' के वेसनगर (विदिशा) के गरुड़ स्तम्भ लेख से प्राप्त होता है ।
- कश्मीरी नवपाषाणिक पुरास्थल बुर्जहोम से गर्तावास का साक्ष्य मिला है ।
- प्राचीनतम सिक्कों को आहत सिक्के कहा जाता है , इसी को साहित्य में काषार्पण कहा गया है ।
- सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख लिखने का कार्य यवन शासकों ने किया ।
- अरिकमेडू (पुदुचेरी के निकट) से रोमन सिक्के प्राप्त हुए हैं ।

TO BUY NOTES WHATSAPP ON 9896160956 THIS IS A SAMPLE PDF

For More Pdfs Join Telegram https://t.me/studymaster

FOR MORE FREE PDFS https://www.studymasterofficial.com

- कलिंग राजा खारवेल के हाथी गुम्फा अभिलेख , रुद्रदामन के जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख , समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ अभिलेख , इत्यादि ऐतिहासिक जानकारियों के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण हैं ।

पाषाण काल

- पाषाण काल को तीन भागों में बाँटा गया है - पुरापाषाण काल , मध्यपाषाण काल तथा नवपाषाण काल ।
- पुरापाषाण काल में मनुष्य की जीविका का मुख्य आधार शिकार था । इस काल को आखेटक तथा खाद्य - संग्राहक काल भी कहा जाता है ।
- लगभग 36 , 000 ई . पू . में आधुनिक मानव पहली बार अस्तित्व में आया । आधुनिक मानव को ' होमोसेपियन ' भी कहा जाता है ।
- मानव द्वारा प्रथम पालतू पशु कुत्ता था , जिसे मध्यपाषाण काल में पालतू बनाया गया ।
- आग की जानकारी मानव को पुरापाषाण काल से ही थी , किन्तु इसका प्रयोग नवपाषाण काल से प्रारम्भ हुआ था ।
- नवपाषाण काल से मानव ने कृषि - कार्य प्रारम्भ किया , जिससे उसमें स्थायी निवास की प्रवृत्ति विकसित हुई ।
- भारत में पाषाणकालीन सभ्यता का अनुसन्धान सर्वप्रथम रॉबर्ट ब्रूस फुट ने 1863 ई . में प्रारम्भ किया ।
- भारत में व्यवस्थित कृषि का पहला साक्ष्य मेहरगढ़ से प्राप्त हुआ है ।
- बिहार के चिरांद नामक नवपाषाणकालीन स्थल से हड्डी के औजार मिले हैं
- पाषाण काल के तीनों चरणों का साक्ष्य बेलन घाटी इलाहाबाद से प्राप्त हुआ है
- औजारों में प्रयुक्त की जाने वाली पहली धातु ताँबा थी तथा इस धातु का ज्ञान मनुष्य को सर्वप्रथम हुआ ।
- चावल की खेती का प्राचीनतम साक्ष्य कोलडीहवा (इलाहाबाद) से पाया गया है ।
- पहिए का आविष्कार नवपाषाण काल में हुआ ।

सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा)

सिन्धु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता के प्रमुख स्थल, उत्खननकर्ता, ई., नदी, वर्तमान स्थिति, प्राप्त महत्त्वपूर्ण साक्ष्य

प्रमुख स्थल	उत्खननकर्ता	ई.	नदी	वर्तमान स्थिति	प्राप्त महत्त्वपूर्ण साक्ष्य
हड़प्पा	दयाराम साहनी एवं माधोस्वरूप वत्स	1921	रावी	पाकिस्तान का माण्टगोमरी जिला	ताँबे का पैमाना, ताँबे की इक्कागाड़ी, ताँबा गलाने की भट्टी, अन्नागार

THIS IS A SAMPLE PDF
TO BUY NOTES WHATSAPP ON 9896160956

For More Pdfs Join Telegram https://t.me/studymaster